भयानक षड्यन्त्र

आगाखानियों की धोखेबाज़ी और चालाकी का

प्रत्यक्ष नमूना.

मूल्य केवल २ आना.

प्रथम संस्करण की भूमिका

जा हसन निजामी दिल्ली ने एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये जो जो हथकंडे अपनी पुस्तक "दाइये इस्लाम" में बताये थे, वे सब मैं "खतरे का घन्टा" नामक पुस्तक में बतला चुका हूँ । इसी सम्बन्ध में श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती द्वारा उर्दू में प्रकाशित "दाइये-इस्लाम या तवाहिये-इस्लाम" नामी पुस्तक देखने से पता लगा कि ख्वाजा साहिब ने तो हाथ धोकर हिन्दू जाति के नाश करने का बीड़ा उठा लिया है। पुस्तकों के अतिरिक्त जहाँ आप एक ओर ट्रैक्टों, नोटिसों तथा पाक्षिक व मासिक पत्रिकाओं द्वारा हिन्दुओं को हड़प करने के लिये अपने मुसलमान भाइयों को उकसा रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर मक़तबों (पाठशालाओं), दवा बेचने वालों, फेरी करने वालों तथा फकीरों और प्रचारकों द्वारा उन्हें बेधर्म करने की घातें सोच रहे हैं। आज मुझे बड़ी कठिनाई से साढ़े तीन रुपये में उनकी एक २४० पृष्ठ की पुस्तक हाथ लगी। उसका नाम व विषय तो पाठकगण आगे पढ़ेंगे ही, यहाँ पर पुस्तक के टाइटिल की ३, ४ पंक्तियाँ लिख देने मात्र से पता लग जावेगा कि इस पुस्तक का "भयानक षड्यन्त्र" नाम कितना उपयुक्त है। आप किताब का नाम देकर लिखते हैं कि इस्लाम के आरम्भ काल से सन् हिजारी १३३८ तक "फातीमी सादात" ने इस्लाम धर्म के फैलाने में जो २ गुप्त हिक्मतें कीं और लाभकारी सिद्ध हुईं उनका वर्णन इस पुस्तक

में है। अतएव आरम्भ से अब तक के समस्त षड्यन्त्रों को यदि हिन्दू जनता भली प्रकार से जान लेगी तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि जिस प्रयोजन की सिद्धि के लिये ख्वाजा साहेब ने अपनी पुस्तक लिखी है उसमें सफल नहीं होंगे, किन्तु यदि हिन्दू जनता ने उन सब षड्यन्त्रों के जानने की चेष्टा न की या जान कर भी अपनी गाढ़निद्रा से सचेत न हुई तो वह दिन दूर नहीं जब एक करोड़ क्या सारे ही हिन्दुओं का नाम भारतवर्ष, नहीं २, सारी दुनियां से मिट जावेगा।

देश के हिन्दू मुसलमान बड़े २ नेता हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के लिये अपनी जान खपा रहे हैं और सैकड़ों नहीं हजारों इसी एकता के लिये जेल की कठिन से कठिन यातनायें भोग रहे हैं, और इसी एकता के लिये लाखों रुपये पानी की नाईं बहा दिये गये, यह कितनी लज्जा की बात है कि मुसलमान सज्जन इस प्रकार की नीच तथा निन्दनीय चालों द्वारा हिन्दू जाति को नाश करने की ठानें। हिन्दू और आर्य्यों के शान्तिपूर्वक अपने धर्मप्रचार और शुद्धि आन्दोलन को, तो एक स्वर से सारे के सारे मुसलमान लीडर बेजा और असामयिक बताते हैं, पर अपने जाति भाइयों द्वारा इस प्रकार की घृणित कार्य्यवाहियों को बुरा कहना तो दूर रहा, उल्टे उनका समर्थन कर रहे हैं। यही कारण है कि जिसने एक कट्टर कांग्रेस के अनुयायी को इस पुस्तक के लिखने को उद्यत किया। आशा है कि हिन्दू नर नारी इस पुस्तक को पढ़कर सचेत होंगे और अपने धर्म की रक्षा का कुछ प्रयत्न करेंगे और मुसलमान भाई अपनी करतूतों पर पश्चात्ताप करके ऐसे निन्दनीय हथखन्डों को करने से बाज आवेंगे।

—लेखक.

ओ३म्

भयानक षड्यन्त्र

ख्वाजा हसननिज़ामी के षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़

ज़ा साहब ने "दाइये इस्लाम" नामी किताब द्वारा भारतवर्ष में आग लगादी है। मुसलमानों ने उस किताब के शब्द २ पर अमल करना आरम्भ कर दिया है। समाचार-पत्र पढ़ने वाले लोग जानते हैं कि अब चारों ओर से यही समाचार आरहे हैं कि मुसलमान लोगों ने हर प्रकार से हिन्दुओं को नष्ट भ्रष्ट करने की ठानली है। कांग्रेस के बड़े बड़े नेता तन मन से हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये प्रयत्न कर रहे हैं, पर ज्यों २ वे प्रयत्न करते हैं पारिणाम उलटा निकलता है। ऐसा क्यों होरहा है? इस प्रश्न को हल करने के लिये बड़े बड़े महान् पुरुष अपना २ दिमाग़ लड़ा रहे हैं फिर भी अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मैं जिस परिणाम पर पहुंचा हूँ वह नीचे देता हूँ:—

हिन्दू (आर्य्य) सदा से सरल स्वभाव वाले रहे हैं, हरएक की बात पर विश्वास करके उस पर अपना सब कुछ वारने को तैयार रहते हैं, उन्होंने अपने किसी काम में चाहे वह धार्मिक प्रचार हो, चाहे राजनैतिक, चाहे सामाजिक हो और चाहे शरीर से सम्बन्ध रखता हो, कभी भी छल कपट नहीं किया और न कभी पालिसीबाज़ी से काम लिया। बड़े से बड़े बादशाह के सम्मुख भी साफ़ साफ़ कह दिया, जिसके कारण उन्हें अपना

सब कुछ खोना पड़ा है। मैं इस स्थान पर उन सब घटनाओं को लिखकर पुस्तक को बढ़ाना नहीं चाहता कि किस प्रकार से अक़बर और औरंगजेब आदि बादशाहों तक के सम्मुख हिन्दुओं ने अपने अन्दर की बात नहीं छिपाई और उसके उत्तर में उन्हें अपनी जान तक देनी पड़ी, ये सब घटनायें इतिहास पढ़ने वाले पाठक जानते ही हैं। मैं यहां पर केवल उस भारतवर्षव्यापी आन्दोलन का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसे महात्मा गान्धीजी ने जारी किया था। महात्माजी ने हिन्दुओं को मुसलमानों से बिना किसी शर्त के एकता करने की आज्ञा दी, हिन्दुओं ने दिलोजान से स्वीकार किया, केवल वाणी से नहीं वरन् कार्य से भी उसे करके दिखा दिया, लाखों रुपये उनके खिलाफ़त फण्ड में दिये, हज़ारों मनुष्यों ने उसी खिलाफ़त के लिये जेल की कड़ी से कड़ी यातनाओं को सहा, कट्टर हिन्दुओं ने उनके हाथ का ही नहीं वरन् उनके जूंठे गिलासों में पानी पिया और एक साथ बैठ कर खाना तक खाया। उसके उत्तर में उन्हे क्या मिला? मालाबार और मुल्तान का भयङ्कर और हृदयविदारक क़त्ले-आम व लूट मार! म० गान्धीजी और बहुत से हिन्दू नेताओं ने कहा, "भूल जाओ और आगे अवसर दो," फिर क्या मिला, "अमृतसर, लाहौर, अजमेर, सहारनपुर, मेरठ, पानीपत, आगरा, नागपुर और गोंडा आदि की चढ़ाइया"।

एक ओर से मुसलमानों ने हिन्दुओं को इस प्रकार से तबाह करने की ठानी तो दूसरी ओर से ख्वाजा हसननिज़ामी और मौलाना अब्दुलबारी आदि ने पुस्तकों, लेखों तथा व्याख्यानों द्वारा उन्हें मिटाने का खुला चेलेंज दिया। उनको उपरोक्त कार्यवाहियों पर मुझे दुःख नहीं है पर दुःख है तो इस बात का कि उन्होंने छुपे २ बड़े २ गुप्त षड्यन्त्र बनाकर हिन्दुओं की सरलता का अनुचित लाभ उठाया। मुसलमानों के भारतवर्ष में आने की

तारीख से अब तक का इतिहास पढ़ जाइये, आपको आदि से अन्त तक यही मिलेगा।

जहाँ मुसलमान सदा हिन्दुओं के सर्वनाश का विचार करते रहे, वहाँ वे सदा अरब, टर्की और काबुल को अपनी मातृभूमि समझते रहे और समझते हैं। उन्हें भारत के हानि लाभ से कुछ सरोकार नहीं उन्हें यदि प्रेम है तो उन मुल्कों से जहां से उनका कोई लाभ नहीं, उस धर्म पुस्तक से जो उनके लिये कुछ हितकर नहीं और उन विदेशी नेताओं से जिनका उनसे अब कुछ भी सम्बन्ध नहीं। यह क्यों? केवल इसलिये कि भूल से, लोभ से, भय से अथवा और किन्हीं कारणों से उनके मत के ये अनुयायी बन गये हैं और इसलिये अपनी ओर से दो शब्दों में यही उत्तर है कि जबतक मुसलमान लोग अपनी मातृभूमि के हित को अपना हित और अहित को अपना अहित न समझेंगे तब तक हिन्दू मुस्लिम एकता कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है।

मुसलमान लोग कई सौ वर्ष हिन्दुओं पर शासन करने के कारण अपने को शासक जाति मानते हैं, अपने कई राज्यों के बल पर फिर से भारत पर शासन करने के स्वप्न देख रहे हैं और दुर्भाग्य से "पान-इस्लामिक" आन्दोलन ने उनकी इस आकांक्षा को और भी बढ़ा दिया है। अतएव ऐसी दशा में उनसे एकता की आशा करना क्या भूल की बात नहीं है, पाठकगण स्वयं विचार करलें।

ऊपर जो कुछ लिखा गया वह तो है सामयिक परिस्थिति की बात, अब पाठकगण ख्वाजा हसननिजामी की बात सुनें। आपने "दाइये इस्लाम" नामी पुस्तक में जो कुछ लिखा है उसे "खतरे का घण्टा" नामी पुस्तक में अच्छी तरह बता दिया गया है। मुसलमानों ने जिस प्रकार से दाइये इस्लाम में बताये हुए हथकन्डों द्वारा हिन्दुओं को मुसलमान बनाना आरम्भ कर दिया है इसके दो चार उदाहरण यहाँ पर दे देना अनुचित न होगा।

क़न्नौज तहसील का एक कान्यकुब्ज लड़का, जिसकी आयु १८ वर्ष की थी, मुसलमान बनाया गया और बनाया भी वहाँ ही के एक मुसलमान ने, जिस स्थान का वह लड़का था। क़न्नौज का एक मुसलमान कान्स्टेबल दिल्ली में नौकर था, जब घर आया उस लड़के से कहा कि तुम मेरे साथ दिल्ली चलो, तुमको मैं वहाँ नौकरी दिला दूंगा, मियां लड़के को दिल्ली ले गये और नौकरी तो न दिलाई, किन्तु मुसलमानी दिलाकर पढ़ने अवश्य भेज दिया। जब उस ब्राह्मण पुत्र को यह प्रतीत हुआ कि मेरा प्राण से भी प्यारा धर्म भ्रष्ट किया जावेगा तो उसने कई प्रकार के प्रयत्न किये कि किसी प्रकार भाग जाऊं। किन्तु उन धर्मद्रोहियों के पंजे से न निकल सका।

ज़िला आरा का सरयूपारीण ब्राह्मण का एक चौदह वर्ष की आयु वाला लड़का भी नौकरी के बहाने मुसलमानों ने भगाया और उसे मुसलमान बनाने का यत्न कर ही रहे थे कि भारतीय हिंदू शुद्धि सभा ने बचा लिया और अपने व्यय से उसको उसके घर भेज दिया।

छोटी अवस्था के लड़के और लड़कियां आगरे के हलवाइयों की दूकानों पर जूंठे दोना चाटते फिरते थे, उनसे पूंछने पर मालूम हुआ कि कई ब्राह्मण बालक हैं तो कई क्षत्रिय पुत्र हैं। एक लड़के से पूछने पर कि तुम कौन जाति हो, उसने अपने को मुसलमान बताया, बाप के सम्बन्ध में पूछने पर उसने बताया कि वह जाट था और कहा कि माता पिता के मरजाने पर जब में भूखों मरने लगा तो एक आदमी ने मुझे दो रोटियाँ दीं, जब मैंने खालीं तो उसने कहा कि मैं मुसलमान हूँ, तू भी मुसलमान होगया, अब मैं तुझे रोज़ रोटी दूंगा। इसी प्रकार के दो बालक और भी, चार दिन तक हम तीनों को कलमा सिखाता रहा, जब हम सबने कलमां याद कर लिया तो उसने कहा अब तुम सब पक्के मुसलमान हो गये। जाओ, माँगो और खाओ?

ज़िला मुरादाबाद ग्राम रामपुर के एक लड़के को मुसलमान लोग मुसलमान बनाने के लिये पंजाब लेजा रहे थे, मालूम होने पर बटाला के रेलवे स्टेशन पर उनसे छीना गया।

हिन्दुस्तान के दुलारे भारत के प्यारे भगवान् कृष्णचन्द्रजी की जन्म भूमि मथुरा की भी एक दुर्घटना सुनिये, जिसका अभी हाल ही में अदालत में फैसला हुआ है। १६ वर्षीय चौबिन घर में वैमनस्य के कारण रात्रि को यमुना में डूबने जारही थी, द्वारिकाधीश के मन्दिर के पहरेवालों ने उसको रोक कर और समझा कर नगाड़ची, जो द्वारिकाधीश के मन्दिर के ऊपर रात्रि के ११ से १२ बजे तक नगाड़ा बजाया करता था, के साथ कर दी और नगाड़ची से कह दिया कि संभाल कर उसको उसके घर पहुँचा आना, किन्तु मुसलमान नगाड़ची उसे मुसलमानों के पास ले गया और जो करना था उसके साथ किया। पता लगाने पर भी मुसलमानों ने उस स्त्री को जीती हुई न दिया अपितु उस अरक्षिता अबला को गला दबाकर मारडाला और एक कुए में फेंक दिया और भी एक ब्राह्मण की स्त्री को उठा ले गये और अब वह वेश्या बनी मथुरा ही में मौजूद है।

भरतपुर के एक अहीर का लड़का जिसकी आयु १६ वर्ष की थी नौकरी के लिये दिल्ली गया किन्तु नौकरी न मिली और जो कुछ पास था उसको खो बैठा। जब भूखा मरने लगा तो एक मुसलमान ने जामामस्जिद में लेजाकर मुसलमानी कर (इन्द्रिय की खाल काटने को मुसलमानी कहते हैं) डाली, जब तक घाव अच्छा न हुआ तब तक तो उसको खिलाता रहा, अच्छा होने पर कहदिया कि जाओ, मांगो और खाओ!

शहर फतेहपुर में एक मुसलमान रईस के लड़के को एक हिन्दू टीचर पढ़ाता था। एक मुसलमान ने यह देख उनको लानत मलामत किया, उसी दिन हटाकर मुसलमान टीचर रक्खा गया।

बंगाल से २ बंगाली ८ व १० वर्ष के बालकों को एक मुसलमान उड़ाकर दिल्ली ले गया और कोतवाली में उनके नाम मुसलमानी बताकर यतीमख़ाने में दाख़िल कराना चाहा, किन्तु बात प्रकट होगई और वे हजरत पकड़े गये।

सहारनपुर के एक ग्राम के पास बाग़ में बरात ठहरी हुई थी, कुछ मुसलमानों ने उसपर हमला किया और वर वधू के जेवरों तक को लूटने से न छोड़ा। जब इस बात की रिपोर्ट पुलिस को की गई और कई मुल्ज़िमों को पकड़ कर कोतवाली लेजाया गया तो मुसलमान कोतवाल ने उन्हें छोड़ दिया और कहा जाता है कि रिपोर्ट तक उनकी न लिखी।

अमृतसर में जब एक मुसलमान प्रचारक साधु के भेष में कई हिन्दू बच्चों को उड़ाने के अभियोग में पकड़ा गया, तो उसने बताया कि उसके साथ १७ पुरुष और १३ स्त्रियाँ और हैं जो साधु के भेष में हिन्दू बच्चे व विधवाओं को उड़ाते और मुसलमान बनाते हैं।

इसी प्रकार जगरावां में भी २७ मुसलमान साधू के भेष में पकड़े गये हैं।

सुना गया है कि अजमेर के सिलावटों (राजों) को मुसलमान मुल्लाओं की ओर से आज्ञा हुई है कि उनके साथ जितनी हिन्दू मजदूरनें, जो प्रायः रेगर जाति की होती हैं और मज़दूर लड़के रहते हैं उन सबको मुसलमान बनावें।

दिल्ली में बीसियों बच्चे रोज़ उड़ाये जा रहे हैं और यह बात बड़े दुःख से लिखना पड़ता है कि कई हिन्दू टांगे वाले रुपयों की ख़ातिर इस काम को मुसलमानों की ओर से कर रहे हैं।

बांदे के चार मुसलमान एक स्त्री को उसके पति की अनुपस्थिति में कुंये पर से, जहाँ वह पानी भरने गई थी, उठा लेगये, अन्त में अदालत से उन्हें सज़ा मिली।

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस मेरठ के हेडक्लर्क के १० वर्ष के

बालक को १ मुसलमान टिकट कलेक्टर बहका कर ले गया और उसकी चोटी काटने को ही थे कि प्रजारक्षिणी सभा के वालंटियरों ने ऐन मौक़े पर पहुंच कर उसे छुड़ाया।

उपरोक्त लिखी हुई बहुत साधारण घटनायें हैं। पुस्तक बढ़ जाने के भय से उन तमाम का उल्लेख नहीं किया गया, जो प्रतिदिन हुआ करती हैं और उनके द्वारा सारे भारतवर्ष में हज़ारों हिन्दू विधवायें और नवयुवक मुसलमान बनाये जा रहे हैं। जहां एक ओर मुसलमानों की इस प्रकार चालें चली जा रही हैं, वहां दूसरी ओर हिन्दुओं का बहिष्कार करने की तरकीबें भी सोची जारही हैं। मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ व्यवसायों को करना आरम्भ कर दिया है। हिन्दू नौकरों को अपने यहां से अलग करना, उनकी दूकान से कोई वस्तु न खरीदना, यह सब काम बड़े वेग से किये जारहे हैं, पर हिन्दू अब भी अपनी नींद में मस्त हैं। एक तो कुछ करने को तैयार नहीं होते और यदि बहुत प्रयत्न से कुछ किया भी तो शीघ्र ही हतोत्साह होकर बन्द कर देते हैं। ऐसी दशा में इस जाति की ईश्वर ही रक्षा करे तो हो सकती है, अन्यथा नहीं।

हिन्दुओं की इस प्रकार की लापरवाही देखकर मुसलमानों ने अब बाजे का एक नया षड्यन्त्र रचा है। हिन्दुओं के शादी विवाहों तथा ग़मी तक के बाजे बन्द कराने पर ही बस नहीं किया उनके त्यौहारों और धार्मिक जुलूसों तक के बाजे बन्द कराने पर उतारू हो गये हैं, जहां कहीं लूट मार या और शरारत का मौका न मिला, झट बाजे का प्रश्न उपस्थित कर दिया कि मस्जिदों के सामने बाजे नहीं बजने देंगे। पब्लिक सड़क जो अधिकतर हिन्दुओं के रुपये से सरकार बनवाती हैं उसपर बाजे बन्द कराने की नई और बिलकुल नई चेष्टा है। दुःख है कि सरकार भी इस समय किसी विशेष पालिसी का अनुभव रख कर भी उनके कहने पर बाजे बन्द करा देती है। क्या कभी हिन्दुओं

ने उनके मोहर्रमी बाजों को मन्दिर के सामने रोका है। यदि मुसलमान अपनी मस्जिदों के सामने बाजे नहीं चाहते तो उन्हें चाहिये कि अपनी मस्जिद शहर से बाहर बनावें। अस्तु कहने का मतलब यह है कि अब इन सब षड्यन्त्रों से बहुत शीघ्र हिन्दुओं को सावधान होजाना चाहिये।

फ़ातमी दावत इस्लाम।

जिस पुस्तक का उल्लेख मैंने अपनी भूमिका में किया है और जिसके आधार पर यह पुस्तक लिखी जा रही है उसका नाम "फ़ातमी दावत इस्लाम" है। इसकी प्रथमावृत्ति ४००० छपी है और तीन रुपये एक प्रति का मूल्य रक्खा गया है। पुस्तक के टाइटिल पर ही लिखा गया है कि इस में 'उन ख़ुफ़िया हिक़मत-अमलियों का बयान है, जो इस्लाम के प्रचार करने में मुफ़ीद हुई"। ख़्वाजा साहब पुस्तक के अन्त में लिखते हैं कि वर्षों से मैं इस कोशिश में लगा था, गुजराती और अंग्रेज़ी पुस्तकों के तर्जुमें, बहुतसा धन व्यय करके कराता और पढ़ता था, भिन्न २ स्थानों में बार बार जाता और जहां कोई मतलब की बात मिलती नोटकर लेता था। इस प्रकार से बड़े परिश्रम करने पर इस पुस्तक को तय्यार किया गया है।

पाठकगण! मैंने ख़्वाज़ा सा० की उपरोक्त पुस्तक से वह सब बातें चुनली हैं, जिनका सम्बन्ध भारतवर्ष से था और उन्हीं को इस पुस्तक में स्थान दिया गया है। जिन २ बातों का सम्बन्ध दूसरे देशों से था, उन सब को छोड़ दिया गया है, साथ ही साथ बहुतसी ऐसी बातें भी इस पुस्तक में बढ़ा दी गई हैं जो ख़्वाजा सा० की पुस्तक लिखने के बाद उन्होंने या उनके अनुयायियों ने जारी की है।

परनामी मत के चार लाख अनुयाइयों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

परनामी मत के अनुयायी इस समय लगभग ४ लाख हैं जो पन्ना, बुन्देलखण्ड, जामनगर, काठियावाड़, सूरत, कमालिया, भावनगर, पाकपटन, मान्ट गोमरी, लायलपुर, अम्बाला, दिल्ली और नैपाल आदि नगरों में फैले हैं।

यह मत औरंगज़ेब बादशाह के समय, धनी देवचन्द नाम के एक कायस्थ द्वारा चलाया गया था। इनके चेले प्राणनाथ ने इसे अधिक उन्नति दी, इनका धार्मिक पुस्तक का नाम श्रीकुल ज़ुम स्वरूप है, जो १८ भागों में विभक्त है। इसे अबतक हस्त-लिखित ही रक्खा गया है, क्यों कि छपा देने में अन्य मतावल-म्बियों के हाथ पड़ जाने का भय है। यह इतना गुप्त रक्खा गया है कि इतने वर्ष हो जाने पर भी अब तक इसे कोई नहीं देख पाया, इस पुस्तक की भाषा हिन्दी गुजराती, मारवाड़ी तथा पंजाबी मिली हुई है। इस मत के लोग श्रीकृष्ण भगवान् को ११ वर्ष ५२ दिन की आयु तक अवतार मानते हैं, इसके पश्चात मोहम्मद साहेब को उनका अवतार कहते हैं। इसी कारण अधिकांश लोग श्रीक़ुलज़ुम-स्वरूप के साथ क़ुरान को भी पवित्र पुस्तक मानते हैं। कछ लोग पुराणों को भी मानते हैं, पर कहने मात्र को उन्हें पढ़ते नहीं। इनके अतिरिक्त मोहम्मद साहब का मेराजनामा, वफ़ातनामा, नूरनामा भी इनकी धार्मिक पुस्तकें हैं। विकस्वरूप नाम पुस्तक में भगवान् कृष्ण व मोहम्मद

सा० पर जो २ अत्याचार हुए उनका वर्णन है। कई लोग भागवत को भी मानते हैं और कहते हैं कि देवचन्द महाराज ने १२ वर्ष भागवत सुनी थी। मांस व मदिरा का सेवन नहीं करते, इनका ईश्वर साकार है और एक जगह रहता है, जिसको परम-धाम कहते हैं, जहाँ उनके ईश्वर की १२०००, स्त्रियां रहती हैं। परमधाम में सर्व प्रकार की वस्तुयें मिलती हैं। ये लोग अपने मुर्दे प्रायः जल में प्रवाह करदेते हैं और अपनी शादी विवाह अधिकतर आपस में ही करते हैं।

इनके लगभग ढाईसौ मन्दिर हैं जहाँ "श्री क़ुलज़ुमस्वरूप" को रखते हैं, क्योंकि मूर्ति नहीं पूजते। पंजाब में १२ जगह और गुजरात में ४२ जगह मन्दिर हैं। सबसे बड़ा मन्दिर पन्ना में है। ये लोग पन्ना को पद्मावती और जामनगर को नूतपुरी कहते हैं। जामनगर में आजकल जो इनके महन्त हैं वह नैपाल के हैं, इससे पहिले हैदराबाद दक्षिण के थे। प्राणनाथ अपने को "मेंहदी" का अवतार कहते थे और उन्हीं ने क़ुलज़ुम-स्वरूप को लिखा था, जिसको आसमानी किताब कहते थे। क़ुलज़ुम-स्वरूप के ऊपर एक कपड़ा डालते हैं और उसके ऊपर दो ताज रखते हैं, जिनको 'मुकुट' कहते हैं, उसी के पास कुछ थालियाँ वगैरह रख कर इस प्रकार से आडम्बर करते हैं कि जिससे हिन्दू लोगों को मूर्ति होने का भ्रम होजाता है, क्योंकि उसके सामने आर्ती करते और घन्टा भी बजाते हैं, उस जगह लोग आकर शिर झुकाते हैं और मन्दिर का पुजारी अपने मत के लोगों को प्रसाद देता है। ये लोग एक दूसरे से मिलने पर आपस में प्रणाम करते हैं। यदि किसी हिन्दू लड़की को व्याह करके लाते हैं तो पहिले परनामी बना लेते हैं तब उसके हाथ का खाते हैं।

इस मत में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सभी लोग हैं, बुन्देलखण्ड के कई छोटे मोटे राजे भी इसी मत के हैं। इसमें तीन

विभाग हैं, एक तो साधारण होते हैं, दूसरे जिनको 'धर्मी' कहते हैं और जो मन्दिर में पूजा पाठ करते हैं, ये व्याख्यान देते हैं और गृहस्थी भी होते हैं, तीसरे साधु जिनको बाबाजी कहते हैं, ये मन्दिर की सेवा करते हैं और शादी विवाह नहीं करते। इस मत की कई शाखायें मेराज पन्थ और छज्जू पन्थ आदि हैं।

ये लोग माथे पर तिलक और गले में जनेऊ पहिनते हैं, शिर पर चोटी रखते हैं। मर्दुम शुमारी में अपने को हिन्दू लिखाते हैं।

ये लोग भी राधास्वामी मत वालों की तरह अपने मत को सृष्टि के आदि से बताते हैं और कहते हैं कि सन् १६६४ में इस को देवचन्द्र ने प्रगट किया। पन्ना व जामनगर में बड़े बड़े मेले होते हैं।

इन चार लाख भाइयों का संक्षिप्त वृत्तान्त ऊपर लिखा गया है। इनकी लगभग सभी बातें हिन्दुओं की सी हैं, यही नहीं वरन् अपने को ये लोग हिन्दू कहते भी हैं। इनमें मुसलमानी केवल कुछ ही बातें हैं। २, ३ समय संध्या करने के बदले ५ बार प्रार्थना पश्चिम की ओर मुंह करके करते हैं। राधास्वामी पंथवालों की तरह मोहम्मद साहब को भी अवतार मानते हैं। अपनी धर्म पुस्तक में उनकी बहुतसी बातें मिलाली हैं, किन्तु अब इनको पक्के मुसलमान बनाने के लिये जो जो षड्यन्त्र ख्वाजा हसननिज़ामी ने रचे हैं वे पाठकगण ध्यानपूर्वक पढ़ें।

यह तो ख्वाजा सा० ने अपनी गुप्त पुस्तक में लिख ही दिया है कि ये अपने को मर्दुम-शुमारी में हिन्दू लिखाते हैं, क्योंकि इनका रहन-सहन सब बिलकुल हिन्दुओं जैसा है। आगे आप लिखते हैं कि यद्यपि इस पंथ के चलाने वाले देवचन्दजी व प्राणनाथजी को हिन्दू लिखा है, किन्तु इसका असली प्रवर्त्तक यानी मुसलमानों के इस्माइली गिरोह का प्रचारक मालूम देता है, क्योंकि इनके

बहुत से सिद्धान्त वही हैं जो आग़ाख़ानियों और इमामशाहियों ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये बनाये थे, यानी मोहम्मद सा० को कृष्ण भगवान् का अवतार मानना या जो रूप कृष्ण भगवान् में था वही रूप मोहम्मद में था।

आपने उसी गुप्त किताब में एक जगह लिखा है कि मानादोर काठियावाड़ में नवाब साहेब के मकान पर जहाँ मैं ठहरा था एक परनामी साधू से मुलाकात हुई, वह ७० वर्ष की आयु के थे, डाढ़ी मूंछ सब मुँडी थी, माला गले में और एक पुस्तक हाथ में थी, धोती बांधे हुए थे, उन्होंने बहुत सी .कुरान की बातें मुझसे कहीं और बहुतसी ऐसी बातें बताईं जिससे मुझे ज्ञात हुआ कि मुसलमान प्रचारकों ने मोहम्मद के मेराज (.खुदा से (मुलाक़ात व वार्तालाप) की बात को इन लोगों में कहकर अपना मतलब बहुत अच्छी तरह सिद्ध किया है।

ख्वाजा सा० ने एक मुसलमान प्रचारक, जिसने अपना नाम प्रेम रख लिया है, को इनके बीच काम करने के लिये नियत कर दिया है। उसने तथा कुछ और मुसलमान प्रचारकों ने बड़े ज़ोर से इनमें काम करना आरम्भ कर दिया है और उन्हें अपने कार्य्य में सफलता भी हो रही है। यदि हिन्दू महासभा या आर्य समाज ने इनकी ओर ध्यान न दिया तो ये बहुत शीघ्र मुसलमान बन जावेंगे, क्योंकि इनके अन्दर मुसलमानी सिद्धान्त बड़ी दृढ़ता से जमे हुए हैं, जिनके द्वारा मुसलमान प्रचारकों को अपने कार्य में सफलता की बहुत आशायें हैं। ख्वाजा सा० लिखते हैं कि ये लोग अपने को हिन्दू कहते हैं, इससे इनकी ठीक २ गणना नहीं हो सकी। सम्भव है कि चार लाख से ये बहुत अधिक हों। ऐ हिन्दू (आर्य्य) नेतागण! क्या आप इनको मुसलमानों के गाल में समाजाने देंगे या इनके बचाव का कुछ प्रबन्ध करेंगे?

५० लाख से अधिक आग़ाख़ानी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र।

हज़रत नज़ार के पश्चात् इस मत ने बहुत उन्नति की और लगभग सारी दुनियां में इसने अपने प्रचारक भेजे। ख़्वाजा साहेब स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि इस मत में बहुत सी झूठी और गप्प बातें तथा भांति भांति के किस्से कहानियां प्रचलित हैं, यही नहीं मुसलमान लोग इस मत के लोगों को क़ाफ़िर तक कहने में सङ्कोच नहीं करते, किन्तु जब हिन्दुओं को आग़ाख़ानी बनाने का प्रश्न आता है, तब उन्हीं आग़ाख़ानियों के कार्य्य की प्रशंसा करते और आग़ाख़ानियों को सच्चा मुसलमान बताते हैं, यह कितने अन्याय की और पक्षपात की बात है? आग़ाख़ानी मत में अली की बड़ी इज़्ज़त है। ये एक दूसरे से जब मिलते हैं तो पहिले "या अली मदद" कहते हैं, उसके उत्तर में दूसरा "मौला अली मदद" कहता है।

जो हिन्दू आग़ाख़ानी होता है उसका नाम आग़ाख़ाँ जो बताते हैं वह रक्खा जाता है। यह लोग विष्णु, अली, ब्रह्मा, मोहम्मद, महेश, आदम और शक्ति वग़ैरह को मानते हैं। यह कहते हैं कि कलियुग का अथर्ववेद क़ुरान और जगद्गुरु मोहम्मद है। इनका मत है कि सृष्टि के आदि से हज़रत अली का नूर औलाद दर औलाद प्रलय तक प्रवेश करता रहता है। अक्सर लोग कहते हैं कि आग़ाख़ां के पास अली के हाथ का लिखा हुआ क़ुरान और अन्य कई चीजें हैं पर आग़ाख़ाँ उन्हें प्रगट नहीं करते। आवागमन के सम्बन्ध में यह कहते हैं कि जो न ईमानदार हो और न काफ़िर उसे दुबारा जन्म लेना पड़ता है, जो ईमानदार हो वह ख़ुदा में मिल जाता है और जो काफ़िर हो वह नर्क में जाता है। तीन बार इनकी सन्ध्या होती है, प्रातः सायंकाल और रात्रि।

भारतवर्ष में जितने आग़ाख़ानी खोजे हैं उन्हें कबीरुद्दीन और शमशुद्दीन ने मुसलमान किया था, इनके प्रचारक बहुधा साधुओं का भेष धारण करके अवतारों के भजन गाते और कलियुग में आने वाले अवतार की घोषणा करते हैं। हिन्दू लोग कलङ्की अवतार होने की प्रतिज्ञा करते हैं इससे इन प्रचारकों का प्रभाव हिन्दुओं पर खूब होता है और बहुतसी बातें, जो आग़ा-ख़ानी प्रचारकों द्वारा सुनते हैं, ग्रहण कर लेते हैं। इनके प्रचारकों द्वारा पंजाब में लाखों कहार व सुनार आग़ाख़ानी या शमशी मत के अनुयायी बनगये हैं।

कुछ वर्ष हुए जब आर्य्यसमाज ने इनको ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया था, किन्तु एक ओर तो आर्य्यसमाज ने समाचार पत्रों में खूब हुल्लड़ मचाकर और इने गिने कुछ लोगों को आर्यधर्म में लाकर ही सन्तोष कर लिया, दूसरी ओर सर आग़ाख़ां ने सैकड़ों प्रचारकों को उनके अन्दर काम करने के लिये लगा दिया, जिन्होंने केवल इतना ही नहीं कि उन्हें दृढ़ आग़ाख़ानी बनाया, किन्तु आग़ाख़ां की आज्ञानुसार उनके नाम भी मुसलमानी रख दिये जिससे हिन्दुओं को यह पता भी न लगसके कि ये कभी हिन्दू थे। ख़्वाजा साहेब लिखते हैं कि सर आग़ाख़ां ने अपने प्रचारकों को हुक्म दिया था कि जो लोग अपना नाम मुसलमानी न रक्खें उन्हें अपने मत से निकाल दो, इसका परिणाम यह हुआ कि लाखों आग़ाख़ानी हिन्दू अपने २ नाम मुसलमानी रखकर पक्के मुसलमान बनगये और आर्य्यसमाजियों का प्रभाव निष्फल गया। (आर्य्य-समाजियों ने जो थोड़ा बहुत प्रयत्न किया उसका फल अवश्य हुआ पर ख़्वाजा साहब यह तो बतावें कि क्या वह हिन्दू पक्के मुसलमान बन गये या मुसलमानों के सिद्धान्तानुसार काफ़िर बने? क्योंकि आग़ाख़ानी मत तो मुसलमानों की दृष्टि में कुफ्र फैलाता है। कितना अन्धेर और पक्षपात है! यूं तो आग़ाख़ानी क़ाफ़िर किन्तु

हिन्दुओं का धर्म भ्रष्ट करने पर उसकी प्रशंसा और वे आग़ा-ख़ानी हिन्दू पक्के मुसलमान ! धिक्कार है ऐसे पक्षपात पर ! !)

ख्वाजा साहेब आगे पृष्ठ २०१ में लिखते हैं कि अब भी बम्बई व कलकत्ता में बड़े बड़े योग्य आग़ाख़ानी इस्लाम के प्रचार में लगे हुए हैं और मौजूदा इमाम सर आग़ाख़ां की ओर से जो नित्यप्रति जलसे किये जाते हैं, उनमें हज़ारों हिन्दू सम्मिलित होते हैं। ख्वाजा सा० उनकी प्रशंसा करके सुन्नी मुसलमानों को सलाह देते हैं कि जिस अक़्लमन्दी व हिकमतअमली से वे लोग मुसलमान बनाते हैं, तुम भी सोचो और अमल करो।

आग़ाख़ानी प्रचारक हिन्दुओं को अपने चंगुल में फंसाने के लिये हिन्दुओं के बहुत से पौराणिक मतों के कपोलकल्पित सिद्धान्तों को तोड़ मरोड़ कर और उनमें जहां ओ३म्, कृष्ण, राम इत्यादि नाम हैं वहां अली और मोहम्मद आदि के नाम डाल कर प्रचार करते हैं। ख्वाजा सा० अपनी किताब में लिखते हैं कि मैंने आग़ाख़ानियों के एक जलसे में हिन्दुओं को छाती पर तमग़ा लगाये देखा उसमें ओ३म् लिखा था, किन्तु वह ओ३म् इस ढंग से बनाया गया है जो उर्दू में अली भी पढ़ा जा सकता है। उसका नमूना आग़ाख़ानी पुस्तकों में भी दिया है। हम अपने पाठकों की जानकारी के लिये उसे नीचे देते हैं:—

आग़ाख़ानियों ने अपनी किताबों में भी लिखा है कि 'अली ओ३म् है और ओ३म् अली है'। उनका कहना है कि क़ुरानमें "ओ३म्" का अली बताया है और इसके लिये क़ुरान की एक

आयत का हवाला देते हैं जिसका अर्थ है कि "खुदा ने फ़रमाया कि हिकमत वाले अली मेरे नज़दीक ओ३म् किताब यानी ओ३म् है"।

ख्वाजा सा० ने अपनी पुस्तक में म० गान्धी पर भी आक्षेप किया है, आप लिखते हैं कि कुछ आर्य्यसमाजियों के कहने पर म० गांधी ने आग़ाखानी हिन्दुओं को बम्बई में बुलाकर कहा कि तुम अपनी जाति से बाहर न जाओ, क्योंकि हिन्दू धर्म बहुत अच्छा है। उस पर आग़ाखानियों ने महात्माजी को उत्तर दिया कि हम तो अपने असली घर में पहुंच गये हैं, क्योंकि जो ज्योति राम, कृष्ण, विष्णु व ब्रह्मा वग़ैरह में थी वही मौजूदा सर आग़ाखां में है। यह उत्तर सुनकर महात्माजी और सब आर्य्यसमाजी चुप हो गये और इसका प्रभाव इतना पड़ा कि जो हिन्दू आग़ा-खानी न थे वे भी आग़ाखानी हो गये। यह किस्सा ख्वाजा सा० का कहां तक सत्य है, आर्य्यसमाजी तो अच्छी तरह जानते हैं पर यदि सर्वसाधारण को जानना हो तो महात्माजी से पूछलें।

पृष्ठ २०५ में ख्वाजा सा० लिखते हैं कि यद्यपि नज़ारियों ने इस मत को बहुत फैलाया किन्तु, मौजूदा सर आग़ाखां के पूर्व यह बिलकुल अलग ही गिरोह था और मुसलमानी ख़याल बहुत कम था, परन्तु मौजूदा सर आग़ाखां ने मुसलिम यूनीवरसिटी, अलीगढ़ कालिज और अन्य इस्लामी आन्दोलनों में भाग लेकर अपने गिरोह को मुसलमानों से बहुत कुछ मिला दिया और अब आग़ाखानी अपने आप को पक्के मुसलिम मानने लग गये हैं। आग़ाखां ने भी साफ़ कह दिया कि गुप्त रहना ठीक नहीं, मेरे सब अनुयायियों को मुसलमान हो जाना चाहिये। इतने पर भी ख्वाजा सा० को बड़ा दुःख है कि आग़ाखां भारतवर्ष में बहुत कम रहते और प्रचार में बहुत कम भाग लेते हैं। अभी हाल ही में सर आग़ाखां ने एक करोड़ रुपया हिन्दुओं के ७ करोड़ अछूतों को मुसलमान बनाने के लिये देने का वचन दिया है, क्या हिन्दुओं की आंखें अब भी न खुलेंगी?

२० लाख सत्पन्थियों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र ।

सत्पन्थी अधिकतर गुजरात व काठियावाड़ में हैं। अहमदाबाद के समीप 'पीराना' इनका केन्द्र स्थान है, वहाँ एक बहुत बड़ी दरगाह है, जिसमें सय्यद इमामशाह की मज़ार है। उनको मज़ार पर रात दिन एक दीपक जलाया जाता है और पास ही उनकी धर्म पुस्तक सतदोनी रक्खी हुई है। इस दरगाह का पुजारी एक हिन्दू है, जिसको सब काका कहते हैं। उसी के पास दरगाह और सब चेलों की आमदनी आती है और उसके नायब सब चेलों के पास जा जा कर उनकी आय का दशवां हिस्सा वसूल करते हैं। ख्वाजा साहेब लिखते हैं कि 'काका' देखने में हिन्दू मालूम देता है पर यथार्थ में यह मुसलमान है।

कुल आमदनी का एक भाग वसूल करने वालों को दिया जाता है, एक भाग दरगाह के व्यय में लगता है और एक भाग सय्यद इमामशाह की औलाद का, जो अहमदाबाद व पीराना में रहते हैं, दिया जाता है। हर सय्यद को शादी के समय भी कुछ नियत धन दिया जाता है, इसके अतिरिक्त और कोई अधिकार सय्यदों को नहीं है, सब काम काका के अधिकार में है।

इस पन्थ में तेली, गड़रिया, कुम्हार, धुनिये, कूंजड़े आदि बहुत हैं। कुछ बनिये व राजपूत भी हैं। इस पन्थ में २ विभाग हैं एक गुप्ती, दूसरा प्रगटी। गुप्ती बहुत हैं पर अब धीरे २ प्रगटी अधिक हो रहे हैं। गुप्ती का पता लगाना बहुत कठिन है। गुप्ती अनुयायी का पता उसके घर के लोगों तक को नहीं होता। जो प्रगटी हो जाते हैं उन्हें अक्सर मोमिन भी कहा जाता है। प्रगटी होने पर वे "शिया लोगों" की तरह नमाज़ पढ़ने के लिये अक्सर जामे मस्जिद में जाते हैं।

इस पन्थ के बनने की कहानी इस प्रकार से प्रचलित है। एक बहुत बड़ा झुण्ड हिन्दुओं का काशी तीर्थ को आ रहा था, रास्ते में सय्यद सा० ने कहा कि यदि काशी का तीर्थ यहां आजावे तो फिर तुम सब लोग क्यों उतनी दूर जाते हो? सबने चकित होकर पूंछा यह कैसे हो सकता है? सय्यद सा० ने कहा आज रात को तुम सब यहां रहकर मेरी मेहमानी स्वीकार करो तो सुबह मैं उत्तर दूंगा। सब लोग वहां ठहर गये। रात को सबों ने स्वप्न में देखा कि वे सब लोग काशी में हैं। सबों ने एक दूसरे से अपने स्वप्न की बात कही, सबों का स्वप्न एक ही क़िस्म का था। अतएव सब लोग सय्यद सा० के पास गये और उनके पैरों में गिर पड़े और कहा कि हम सब को अपना चेला बना लीजिये। सय्यद सा० ने उन सब को अपना चेला बनाकर उनमें से कुछ पढ़े लिखे लोगों को उन्ही में अपना मत फैलाने के लिये नियत कर दिया, जिन्हो ने थोड़े ही दिनों में लाखों चेले कर लिये।

ख्वाजा साहिब लिखते है कि मैं मोहर्रम सन् १३२८ हिजरी में उनके एक प्रचारक सय्यद यावरअली शाह साहब से मिलने गया तो उनके ही अलम (झण्डे) रक्खे थे उनपर सफेद कपड़ों के फरेरे थे और बहुत से हिन्दू गड़रिये उनके चारों तरफ बैठे थे और सय्यद सा० उपदेश कर रहे थे। दूसरे दिन वहां गड़रिये उन अलम को उठाये सय्यद सा० के साथ चल रहे थे। इस प्रकार से उन्होंने हजारों गड़रियों को मुसलमान बनाया था।

इस पन्थ के प्रचारकों ने बड़ी होशियारी से काम लिया है इन्होंने मुर्दे के गाड़ने पर जोर नहीं दिया बल्कि मुर्दों को जलाने की आज्ञा दी है, परन्तु मुर्दे की एक अंगुली पीर के मजार के पास गाड़ दी जाती है। धीरे २ अब सारे मुर्दों को भी गाड़ने की प्रथा चलपड़ी है। जिसका प्रचार उन लोगों ने इस प्रकार से किया कि जब लोग अंगुली गाड़ने के आदी होगये और मुसलमानी मत

को अच्छा समझने लगे तो फिर यह कहा गया कि अब अग्निदाह का समय गया अब भूमिदाह करना चाहिये और तब चेले लोग बिना किसी संकोच के भूमिदाह करने लग पड़े।

जनेऊ की दरगाह

बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि इस मत के अनुयायियों के तीर्थ पीराना में एक जनेऊ की दरगाह है, जहां हिन्दू लोग इस पन्थ में चेला होते समय अपने जनेऊ उतारते हैं। वहां सब जनेऊ यादगार के तौर पर ढेर किये जाते हैं।

इनकी धर्मपुस्तकों के नाम गुरुवानी, योगबानी और सितोयनी आदि हैं, इस पन्थ को कई शाखाएं नानकपन्थ, कबीरपन्थ और मेराजपन्थ आदि हैं, इनमें और आग़ाख़ानियों में केवल इतना ही भेद है कि ये अपने मुर्शिद को पेशवा मानते हैं और आग़ाख़ानी आग़ाख़ां को हाज़िर ईमान मानते हैं।

बोहरे लोगों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

सब बोहरे लोग, जो बम्बई व गुजरात में लाखों को संख्या में हैं, यथार्थ में पहिले हिन्दू थे, इनके मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र बड़ी विचित्रता से रचा गया था, जो इस प्रकार से है।

सन् ११३७ ई० में एक मनुष्य याकूब नाम का मिश्र अपना देश घरेलू लड़ाई झगड़े के कारण छोड़कर खम्बायत नामी नगर में, जो गुजरात का एक प्राचीन नगर है, आया और एक माली के घर कुछ दिनों रहा जिसे उसने एक सूखे कुए से पानी निकालने की बाज़ी भरी दिखाकर मुसलमान बना लिया और उसके द्वारा मन्दिर के पुजारी तक से अपनी रसाई करली। धीरे धीरे पुजारी

को भी अपने जाल में फंसा कर मुसलमान कर लिया पुजारी जिस मन्दिर की पूजा करता था उसमें चारों ओर चुम्बक पत्थर लगा कर बीच में लोहे का हाथी इस प्रकार से रक्खा गया था कि जिससे वह बिना किसी चीज़ के सहारे के खड़ा था।

पुजारी की मदद से याकूब ने एक पैर के पास का चुम्बक पत्थर निकाल लिया, जिससे उस हाथी का पैर ज़मीन पर टिक गया, फिर उसी पुजारी से वहां के वज़ीर तथा राजा को कहला भेजा कि हाथी थक गया है इससे उसने अपना १ पैर ज़मीन पर टेक दिया है। पुजारी ने दूसरे दिन दूसरे पैर के नीचे का चुम्बक पत्थर निकाल कर दूसरा पैर टिका दिया और इसी तरह चार दिन में हाथी को ज़मीन पर खड़ा कर दिया। इस करामात को देखकर राजा, उसके दरबारी तथा हज़ारों नर-नारी चकित होगये और पुजारी के आदेशानुसार मुसलमान बने। इन लोगों ने अरब के साथ पहिले पहल व्यवहार (सम्बन्ध) किया, इससे पहिले व्यवहारे और फिर बोहरे कहलाने लगे। याकूब के बाद बहुत से प्रचारक हिन्दुस्तान में जिन्होंने बम्बई, सिन्ध, राजपूताना तथा मालवा आदि प्रान्तों में लाखों आदमियों को मुसलमान बनाडाला।

चिश्तियों के खान्दान द्वारा रचे गये षड्यन्त्र

मुसलमानों में गाना-बजाना हराम है, किन्तु ख्वाजा सा० अपनी गुप्त पुस्तक में लिखते हैं कि सब से बड़ी व पहली चीज़ जो चिश्तियों ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की निकाली वह गाना बजाना था। श्रीकृष्णजी के बांसुरी बजाने के किस्से तमाम हिन्दुओं के यहां प्रचलित हैं और उनकी पूजा में गाना बजाना शामिल है, इस बात को जानकर चिश्तियों के प्रचारकों ने अपने दीन में इसे शामिल किया और मुसलमान आलिमों के

मना करने पर भी अपने धुन में लगे रहे जिससे लाखों हिन्दुओं को अपनी ओर खींच लिया।

दूसरी बात चिश्तियों ने झंडे की क़ायम की। इन लोगों ने देखा कि हिन्दू लोग झण्डे झण्डियां देवी देवताओं पर चढ़ाते, अपने मन्दिरों के ऊपर लगाते और जब कहीं यात्रा को जाते हैं तो अपने २ झण्डे लेकर गाते बजाते जाते हैं। जहाँ रात को पड़ाव करते हैं वहाँ झण्डा गाड़ कर उसके चारों ओर बैठ जाते और गीत गाते व बाजे बजाते हैं। अतएव इन्होंने एक इसलामी झण्डा दिल्ली में खड़ा किया और उसी प्रकार से दिल्ली से अजमेर तक ख्वाजा मुइनुद्दीन के सालाना उर्स पर यात्रा करना आरम्भ किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि दिल्ली से अजमेर तक जितने गांव पड़ते थे उन गावों के लोग अपने २ झण्डे लेकर उसी प्रकार से शामिल होने लगे, जिस प्रकार से वे अपनी देवी देवताओं की यात्रा में शामिल होते थे। मुसलमान प्रचारकों ने इन यात्राओं से बड़ा लाभ उठाया, मोहम्मद साहेब, ख्वाजा साहिब तथा और मुसलमान बुजुर्गों की तारीफ़ व मुसलमानी मत की बातों के गीत उन गांव वालों की भाषा में बना २ कर हिन्दू गीतों के साथ मिला दिया करते थे। ख्वाजा हसन निज़ामी लिखते हैं कि दिल्ली से अजमेर तक मेवात और राजपूताने में लाखों आदमी केवल इस रस्म के द्वारा मुसलमान बने।

तीसरी बात चिश्तियों ने क़बर के गिर्द परिक्रमा करने की प्रथा जारी की, हिन्दुओं की तरह मुसलमान भी "काबे" की परिक्रमा करते ही हैं, अतएव चिश्तियों ने ख्वाजा अजमेरी तथा भारत की और बहुत सी क़बरों की परिक्रमा जारी करदी। इसी प्रकार से क़बरों पर फूल व चन्दन चढ़ाते तथा उनके समीप की नदियों या कुओं में स्नान करने की भी प्रथायें प्रचलित कीं, जिनका प्रभाव मूर्ख हिन्दुओं में बहुत पड़ा और अपने देवी देवताओं की

भांति उन्हें भी पूजने लगे। बहुत लोगों का ख़याल था कि हिन्दू हज़ारों देवी देवताओं को पूजते थे इसलिये मुसलमान क़बरों को पूजने लगे, पर ख्वाजा सा० के उपरोक्त कथन से पता लगता है कि बेचारे मूर्ख हिन्दुओं का इसमें दोष नहीं है, यह षड्यन्त्र मुसलमान प्रचारकों ने रचा, अपनी क़बरों व दरगाहों आदि में वे सब बातें करते जो हिन्दू लोग अपने मन्दिरों में करते और अपने सिद्धान्तों के गीत उनकी भाषा में बना २ कर प्रचार करते, जिससे यदि तुरन्त नहीं तो कुछ काल में हिन्दू लोग उन्हें ग्रहण कर लेते थे और फिर उनके असर से मुसलमान होजाते थे।

चिश्ती लोगों ने उपरोक्त बातों के अतिरिक्त क़ब्र को नहला कर उसका पानी चरणामृत की तरह बांटते, जनेऊ की जगह हरे रंग का डोरा बांधते और माथे पर तिलक लगाने के बदले पोले रङ्ग के छींटे डालते, इन सब चालाकियां ने मूर्ख हिन्दुओं पर और अधिक प्रभाव डाला।

हैदराबाद के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के षड्यन्त्र

दराबाद एक मुसलमानी रियासत है परन्तु जिस प्रकार से हिन्दू रियासतों में मुसलमानों को पूरी स्वतन्त्रता होती है उसी प्रकार किसी समय यहां भी थी यही नहीं बड़े २ ओहदों पर भी हिन्दू लोग थे। किन्तु जब "पान इस्लामिक" आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ है तब से यहां के हिन्दुओं पर जो अन्याय व अत्याचार हो रहे हैं वे पाठकगण विश्वतरूप से जांच करने वालों के मुख से सुनें जो निम्न प्रकार से हैं—

हैदराबाद रियासत अब पहिलासा नहीं रहा। राज्य से हिन्दू हाकिम निकाले जा रहे हैं और उनके स्थान में मुसलमानों की भर्ती होरही है यहां की "सिविल लिस्ट" देखने से ज्ञात होगा कि

५ फ़ी सदी हिन्दू भी अब नहीं रहे। हिन्दू लोग इतना तास्सुब देखकर पेट की खातिर मुसलमान होने लगे हैं। मुसलमान लोग अपने बालकों को खिलाने के लिये गांवों से हिन्दू लड़के लड़कियों का ले आते हैं और फिर उन्हें मुसलमान बना लेते हैं। विवाह योग्य हिन्दू लड़के लड़कियों की शादी मुसलमानों में कर देते हैं, फिर गांवों से और ले आते हैं, गांवों की हिन्दू औरतों का भी यही हाल है। पहिले वे १५, २०, २५)रु० मासिक पर धाय बनाकर लाई जाती हैं फिर मुसलमान बनाली जाती हैं। इस प्रकार से हज़ारों हिन्दू मुसलमान बनाली जाती हैं. जो हिन्दू चौके में बैठकर खाते थे वे अब मुसलमानी होटलों में मांस उड़ाते हैं। यहां एक यतीमखाना है जिसमें इस समय ५०० यतीम हैं। हिन्दू यतीम मुसलमान बना लिये जाते हैं. यहां हिन्दुओं का मुसलमान बनाने के लिये नाना प्रकार के प्रलोभन दिये जाते हैं, रियासत की ओर से हिन्दुओं पर न्याययुक्त व्यवहार नहीं हो रहा है क़रीब २ सब हिन्दुओं को जागीर ज़ब्त या कोर्ट करली गई हैं। रियासत में कोई मुसलमान हिन्दू नहीं बनाया जा सकता। आर्य्यों के लिये अपना मन्दिर बनाने की आज्ञा नहीं है पर किसी भी हिन्दू को धड़ल्ले से मुसलमान बना लिया जाता है। यदि यही दशा दश वर्ष तक जारी रही तो अनुमान किया जाता है कि रियासत भर के सारे हिन्दू या तो मुसलमान हो जावेंगे या रियासत छोड़ कर निकल जावेंगे।

अब तो हैदराबाद के निज़ामी शासन की हिन्दुओं के प्रति इतनी कठोरता बढ़गई है कि, वहां आर्य्य और हिन्दू प्रचारकों पर भी कड़ी पाबन्दियां लगादी गई हैं, उनको व्याख्यान देने नहीं दिया जाता, सभाएं और जलसे करने और जलूस निकालने की आज्ञा नहीं दी जाती, नये आर्यसमाज मन्दिर और नये हिन्दू मन्दिर बनाने की आज्ञाएं नहीं दी जाती हैं, १८-१८ वर्ष होगये जीर्णोद्धार तक मन्दिरों का नहीं करने दिया गया। त्यौहारों पर

दंगे कराकर प्रमुख हिन्दुओं और आर्य पुरुषों को फौजदारी के झूठे मुकदमों में फंसाया जाता है। इसकी बड़ी भारी करुण कथा है।

इन ही अत्याचारों से पीड़ित होकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और हिन्दू सभा ने और निजाम राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने जन्म सिद्ध धार्मिक अधिकारों के लिये ता० २६-१२-३८ ई० को सत्याग्रह युद्ध की घोषणा करदी।

इस समय (जुलाई सन् १९३९ ई०) १३ हजार से अधिक सत्याग्रही वीर हैदराबाद की जेलों में कठोर से कठोर यातनाएं भोग रहे हैं। इस सत्याग्रह में बड़े २ वकील, बेरिस्टर, प्रोफ़ेसर, ज़मीदार, कारबारी, व्यवसायी, संन्यासियों और गुरुकुल के स्नातक भी जेल यातनाएं भोग रहे हैं। उत्साही आर्य युवकों ने तो बड़ा भारी भाग लिया, जेल में पैरों में लोहे के कड़े, हथकड़ियां, कालकोठरी, आड़े, बांके, कड़े डंडे, चक्की पीसना, पत्थर कूटना, खुदाई आदि की यातनाएं दी जा रही हैं और ऊपर से घोषित किया जाता है कि हिन्दू मुसलमान सबसे समान व्यवहार है परन्तु तो भी सत्याग्रही जत्थों पर पुलिस की रक्षा में आने पर भी गुण्डों के आक्रमण होते हैं और निज़ाम की पुलिस उनकी रक्षा भी नहीं करती, अपराधी पकड़े भी नहीं जाते, न दण्ड पाते हैं। दसों आर्य वीरों के निर्दयता से प्राण लिये गये परन्तु अपराधी नहीं पकड़े गये, जेल की यातनाओं में भी अनेकों के बड़ी निर्दयता से प्राण लिये गये हैं। यह बड़ी रोमाञ्चकारी कथा है। जेलों तक में मारते २ अधमरे बेहोश हुए लोगों तक की सुन्नत करदी गई है, उनको घोर यातनाएं दे देकर माफ़ी मंगाई जाती है, यह हिन्दू जनता को मुसलमान बनाने का निज़ाम हैदराबाद सरकार का भारी षड्यन्त्र अब खुले रूप से प्रकट होगया है। हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिये अब अधिक हिन्दू जनता

को मोचना न चाहिये और अपने अधिकारों की रक्षा के लिये प्राणप्रण से डटे रहना चाहिये यही सत्य धर्म है। इसी प्रकार धार्मिक अधिकार मिल सकते हैं।

२४ लाख संथालों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

यह सभी जानते हैं कि संथाल हिन्दू हैं इन्हें ईसाई बनाने के प्रयत्न तो बहुत दिनों से जारी हैं पर हिन्दुओं को इनकी ओर से ग़ाफ़िल देखकर अब मुसलमानों ने भी इनके अन्दर अपने प्रचारक भेजना आरम्भ कर दिया है और बड़े वेग से इन्हें मुसलमान बनाया जा रहा है। इनके अन्दर अभी तक किसी हिन्दू ने काम करना आरम्भ नहीं किया।

एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

ख्वाजा हसननिज़ामी जिसे अब हिन्दू बच्चा २ जान गया है, ने जिन २ हथखण्डों से हिन्दुओं को तबाह व बर्बाद करने की ठानी है उसका पूरा २ हाल इस मण्डल द्वारा प्रकाशित "अलार्म-बेल अर्थात् ख़तरे का घंटा" नामी पुस्तक में बताकर हिन्दुओं को सावधान कर दिया था, किन्तु हिन्दुओं ने अभी तक अपनी रक्षा की ओर बहुत कम ध्यान दिया है। उनको ग़ाफ़िल देख ख्वाजा सा० ने अपने हथखण्डों को अमल में लाना आरम्भ कर दिया है। पंजाब, यू० पी० तथा बंगाल आदि देशों में नित्यप्रति उन्हीं हथखण्डों द्वारा सैकड़ों हिन्दू बच्चे और विधवायें उड़ाकर मुसलमान बनाये जाते हैं। अतएव फिर हिन्दू भाइयों को सचेत किया जाता है कि सँभल जाइये और नीचे लिखे हथखण्डों से बचने का उपाय कीजिये।

१—मुसलमान हिन्दू साधुओं के भेष में शहर और गांवों में जावे, हिन्दुओं के यहां टिकते, खाते और मौका पाकर उन्हीं के

बच्चों व स्त्रियों को उड़ाते हैं। आज कल १, २ नहीं इस प्रकार की सैकड़ों घटनायें रोज होरही हैं। सब को चाहिये कि साधुओं को बहुत तहक़ीक़ात के पश्चात् अपने यहां ठहरावें और कपटी लोगों को सज़ा दिलावें।

२—मुसलमान आलिम अपने मुसलमान भाइयों को हिन्दुओं को नष्ट करने के लिये लेखों तथा उपदेशों द्वारा उकसा रहे हैं और जगह २ झूंठे और भड़काने वाले विज्ञापन बांटते व चिपकाते हैं, इनको सत्य न समझें और इनका खण्डन करें।

३—मुसलमानी रियासतों ने अपनी २ रियासतों से हिन्दुओं को जड़मूल से नष्ट करने की ठानली है। भूपाल और हैदराबाद आदि रियासतों की दिल दहलाने वाली घटनायें समाचार पत्रों में पढ़िये।

४—मुसलमान काश्तकार, दस्तकार और तिज़ारत पेशा लोग भी चुप नहीं हैं। ये सब ही हर समय ताक में लगे रहते हैं और मोक़ा पाते ही उनका सर्वनाश कर डालते हैं। तिज़ारत पेशा लोगों में से चूड़ी पहिनाने वाले और फेरी करके सामान बेचने वाले मुसलमान बिना किसी कठिनाई के हिन्दुओं के घरों में जाते और अपने हथखण्डों में कामयाब होते हैं। इस कारण किसी चूड़ी वाले, बिसायती या रङ्गरेज़ को कदापि घरमें न घुसनेदें नहीं तो पछतावेंगे।

५—मुसलमान मुलाज़िम पेशा लोग भी अपना २ फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं। हिन्दू स्त्रियों को बहकाने और उनके सतीत्व नष्ट करने का काम बहुधा रेलवे और पुलिस के मुसलमान कर्मचारी बड़ी क्रूरता से करते हैं। हिन्दुओं के यहां मुसलमान सिपाही, कोचवान तथा मुन्शी वग़ैरह भी इस काम में प्रायः अपने मुसलमान भाइयों को ही मदद देते हैं। तांगे वाले स्त्रियों को धोखा देकर कहीं का कहीं

लेजाते, उनके साथ बलात्कार करते, माल व जेवर छीन लेते और अन्त में मुसलमान बना लेते हैं। इस कारण अपनी स्त्रियों व बच्चों को अकेले कभी मत भेजो। लड़के व लड़कियें गलियों व पाठशालाओं मे बहुत उड़ाये जाते हैं इसका प्रबन्ध करो। बीमार बच्चों व स्त्रियों को मसजिद में फूंक व झाड़ा दिलवाने को मत भेजो, वहां धर्मभ्रष्ट करने के समान हो रहे हैं, किसी फ़क़ीर व झाड़ा फूंकी करने वाले को अपने घर पर मत आने दो नहीं तो धर्म और स्त्री बच्चे खोइयेगा।

६—राजनैतिक लीडरों में से हिन्दू लीडर या तो चुप हैं या मुसलमानों को खुश करने के लिये हिन्दुओं को ही दबाते और कहते हैं कि यदि एक करोड़ हिन्दू मुसलमान हो जावें तो होजाने दो। दूसरी ओर मुसलमान लीडर हर प्रकार से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष इस काम में लगे हुए हैं। यदि कोई एक-आध मुसलमान इसके विरुद्ध दबी ज़बान से कुछ निकाल भी देता है तो उस पर .कुफ्र का फ़तवा लगाया जाता है और उसे तुरन्त माफ़ी मांगनी पड़ती है।

७—सम्पादक, कवि और पुस्तक लिखने वाले मुसलमान तो हाथ धोकर हिन्दुओं के पीछे पड़ गये हैं। अपने समाचारपत्रों, कविताओं और पुस्तकों में ९० फ़ीसदी झूठ लिख २ कर मुसलमानों को उकसाते हैं और अपने धर्मप्रचार में ये भी किसी से पीछे नहीं हैं।

८—डाक्टर व हकीम—यद्यपि अभी तक इस पेशे के लोगों की कोई शिकायत समाचारपत्रों में नहीं छपी किन्तु अपने धर्म-गुरुओं की आज्ञा के विरुद्ध थे भी कैसे चुप रह सकते हैं, यह बात सोचने की है।

९—रंडियां तथा गानेवालों द्वारा हिन्दुओं का मुसलमान बनना तो बहुत काल से जारी है। अब जब कि ख्वाजा सा० ने

उन्हें धार्मिक आज्ञा देदी है तो फिर भला इस काम में शिथिलता क्योंकर रह सकती है ?

१०—भीख मांगने वाले मुसलमान फ़कीरों को भी ख़्वाजा सा० ने अपना फ़र्ज़ अदा करने को कहा है। ये लोग मुसलमानी सिद्धान्त सुना सुनाकर हिन्दुओं से भीख तो पहिले ही मांगा करते थे, अब मौका पा उनके बच्चों को भी उड़ा रहे हैं। यह काम रास्ता चलते बच्चों को मिठाई का लालच देकर या मारने की धमकी देकर अथवा बेहोशी की दवा सुंघा कर किये जाते हैं।

११—जासूस—मुसलमानों को हिन्दुओं का गुप्त से गुप्त भेद लेकर आना बिलकुल सरल बात है, क्योंकि हिन्दुओं का कोई घर ऐसा न मिलेगा जिसमें किसी न किसी प्रकार से मुसलमानों की घुस पैठ न हो।

कहां तक लिखा जावे। ख़्वाजा साहब की बताई चालों का बड़े वेग से प्रचार किया जा रहा है और छोटे से लेकर बड़े तक इस समय हिन्दुओं के धन, जन तथा धर्म के अपहरण करने में उद्यत हैं। ऐसी दशा में हिन्दुओं को क्या करना चाहिये यह नीचे लिखा जाता है :—

१—प्रत्येक मंदिर के पुजारी व कथा बांचने वाले अपना अपना धर्म समझें कि वे अपने भक्तों व श्रोताओं को "ख़तरे का घण्टा" या इस पुस्तक को रोज़ सुनाया करें।

२—प्रत्येक जाति के चौधरी और गांव के मुखिया लोगों को चाहिये कि वे अपनी जाति की पंचायत और गांव में इसे सुनाना अपना धर्म समझें।

३—प्रत्येक शहर व ग्राम के लड़के लड़कियों के स्कूल व पाठशाला के अध्यापक व अध्यापिकाओं को चाहिये कि वे अपने २ स्कूल व पाठशालाओं में उपरोक्त ११ बातें बच्चों को कण्ठ करादें।

४—प्रत्येक ग्राम और नगर के मुख्य २ मुहल्लों में स्वयं-सेवकों का संगठन करके सेवासमितियां और हिन्दू-सभायें बनाना चाहिये और "खतरे के घण्टे" में बताये हुए नियमों के अनुसार अपने २ यहां के बच्चों व विधवाओं आदि की सूची बनाकर सदा उनकी देख रेख रखना चाहिये।

५—अपने २ यहां के नौजवान स्त्री पुरुषों को बलप्राप्ति के उपाय करना चाहिये और आने वाली मुसीबत के लिये सदा तैयार रहना चाहिये।

ये मोटी २ बातें हैं जिनको उठते, बैठते, सोते, जागते सदा ध्यान में रखना चाहिये। यदि अब भी कुछ न किया तो फिर रोने व पीटने के सिवा कुछ न कर सकियेगा। चेतावनी देना हमारा काम था सो कर दिया अब करना न करना आपके हाथ है। यदि अपनी व अपनी जाति तथा धर्म की रक्षा चाहते हैं तो कुछ कीजिये अन्यथा चुप हो रहिये और अपनी आंखों के सामने अपना धन, अपनी जाति, अपनी स्त्रियां, अपने बच्चे तथा अपना धर्म लुटने दीजिये।

——इति——

वेद वेदांग

निरुक्त भाषा-भाष्य—दो भाग ७) वेद में इतिहास नहीं ।॥) शतपथ में एक पथ ।) चारों वेदों की पदानुक्रमणी २०) ऋग्वेद की पदा० १०) [illegible] चारों वेद की पदानु० [illegible] मन्त्रानु० ।) मूल ऋग्वेद संहिता ३) छपता है । मूल यजुर्वेद संहिता ॥=) बढ़िया २) मूल सामवेद संहिता ॥) बढ़िया २) छपता है । मूल अथर्ववेद १॥) बढ़िया ३) निरुक्त मूल ।॥=) अष्टाध्यायी मूल ≡)॥ वेदांगप्रकाश १४ खण्ड ४॥=) वैदिक संध्या)।

वैदिक धर्म और आर्यसमाज

यास्क युग ॥) सोमसरोवर १।) ज्योतिश्चन्द्रिका ।) बाल सत्यार्थ प्रकाश ॥) हमारे स्वामी ।=) सोम ।) बाल वेदामृत ।=) वैदिक निर्वाचन पद्धति ।) यज्ञ और विज्ञान ।॥) वैदिक साहित्य और भौतिक विज्ञान ।-) वैदिक सूर्यविज्ञान =) ऋग्वेद में रुद्र देवता ॥=) वेद से वेदार्थ ।) वेद में मित्र वरुण शिक्षा -)॥ वैदिक सिद्धान्त दर्पण १) दिव्यदयानन्द १) आर्योदय १) संध्या प्रदीपिका ॥=) कर्मप्रभाकर ।=) वैदिक पशुयज्ञ मीमांसा ।॥) पुत्रेष्टियज्ञ १॥) वैदिक पीयूष बिन्दु ।-) दयानन्दरत्नमाला ।) ब्रह्मचर्य ही जीवन है ।॥) आर्यपर्वपरिचय =) यमपितृ परिचय २)। स्वामी दयानन्द और विज्ञान के अन्तिम निर्णय १॥)

दर्शन और स्मृति ग्रन्थ

मनुस्मृति १।) मनुस्मृति (बड़ी साईज) १॥) आर्षमनुस्मृति १॥) भास्कर प्रकाश २॥) आस्तिक वाद १) जीवात्मा ३) वैदिक सिद्धान्त (नारायण स्वामी) १)। मृत्यु और परलोक ।-)

गीता-साहित्य-उपनिषदें

श्रीमद् भगवद्गीता भाषा टीका ॥≡) (मोटे अक्षर) ॥) गुटका =)॥ टीका मा० गांधी १) दोहानुवाद २) गीता तावीजी =) गीता शांकर भाष्य हिन्दी अनुवाद २॥) गीता का व्यवहारिक दर्शन २) गीता पद्यानुवाद १) गीतोक्त सांख्ययोग -)॥ गीता में भक्ति योग ।-) गीता (आर्य मुनि भाष्य) ७) गीता पुरुषार्थबोधनी टीका तीन खण्डों में ६) ३) प्रति खण्ड । वेदान्त तत्व कौमुदी (आर्यमुनि) ।=)

पता—आर्य्य साहित्य मण्डल लि० अजमेर ।